



0755CH06

पञ्चमः पाठः

सदाचारः



आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥1॥

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्ने चापराह्निकम् ।
नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम् ॥2॥

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः ॥3॥

सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता तथा ।
ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं न कदाचन ॥4॥

श्रेष्ठं जनं गुरुं चापि मातरं पितरं तथा ।
मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा ॥5॥

मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः ।
इति ज्ञात्वा प्रयासेन तदेव परिवर्जयेत् ॥6॥

शब्दार्थः

| | | | |
|-------------|---|-------------------------------|----------------------------------|
| रिपुः | - | शत्रु | enemy |
| उद्यमः | - | परिश्रम | hard work |
| शरीरस्थः | - | शरीर में स्थित | existing in the body |
| अवसीदति | - | दुःखी होता है। | become sorrow |
| श्वः | - | आने वाला कल | tomorrow |
| कुर्वीत | - | करना चाहिए | should do |
| पूर्वाह्ने | - | दोपहर से पहले | in the forenoon |
| आपराह्निकम् | - | दोपहर के बाद करने योग्य कार्य | work to be done in the afternoon |
| अनृतम् | - | झूठ | lie |
| सनातनः | - | सदा से चला आ रहा हो | eternal |
| स्यात् | - | हो | should be |
| औदार्यम् | - | उदारता | generosity |
| ऋजुता | - | सरलता | simplicity |
| मृदुता | - | कोमलता | softness |
| कौटिल्यम् | - | कुटिलता, टेढ़ापन | wickedness |
| सेवेत | - | सेवा करनी चाहिए | should serve |
| परिवर्जयेत् | - | बचना चाहिए | should avoid |
| वाचा | - | वाणी से | by speech |





1. सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।
2. उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुपयुक्तकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

(क) प्रातः काले ईश्वरं स्मरेत्।

(ख) अनृतं ब्रूयात्।

(ग) मनसा श्रेष्ठजनं सेवेत।

(घ) मित्रेण कलहं कृत्वा जनः सुखी भवति।

(ङ) श्वः कार्यम् अद्य कुर्वीत।

3. एकपदेन उत्तरत-

(क) कः न प्रतीक्षते?

(ख) सत्यता कदा व्यवहारे स्यात्?

(ग) किं ब्रूयात्?

(घ) केन सह कलहं कृत्वा नरः सुखी न भवेत्?

(ङ) कः महारिपुः अस्माकं शरीरे तिष्ठति?

4. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) मृत्युः न प्रतीक्षते।

(ख) कलहं कृत्वा नरः दुःखी भवति।

(ग) पितरं कर्मणा सेवेत।

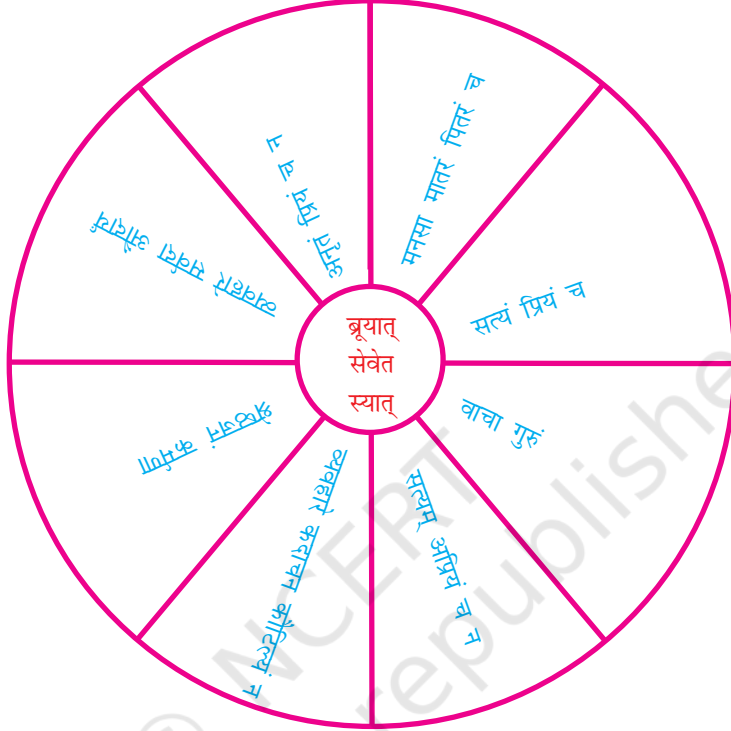
(घ) व्यवहारे मृदुता श्रेयसी।

(ङ) सर्वदा व्यवहारे ऋजुता विधेया।



रुचिरा - द्वितीयो भागः

5. प्रश्नमध्ये त्रीणि क्रियापदानि सन्ति। तानि प्रयुज्य सार्थक-वाक्यानि रचयत-



- (क) | (ख) |
(ग) | (घ) |
(ङ) | (च) |
(छ) | (ज) |

6. मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

तथा न कदाचन सदा च अपि

(क) भक्तः ईश्वरं स्मरति।

(ख) असत्यं वक्तव्यम्।

- (ग) प्रियं सत्यं वदेत्।
 (घ) लता मेधा विद्यालयं गच्छतः।
 (ङ) कुशली भवान्?
 (च) महात्मागान्धी अहिंसां न अत्यजत्।

7. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-



| | | | | | |
|---------|-----------|------------|----------|----|--------------|
| लिखति | कक्षायाम् | श्यामपट्टे | लिखन्ति | सः | पुस्तिकायाम् |
| शिक्षकः | छात्राः | उत्तराणि | प्रश्नम् | ते | |

.....

.....

.....

.....

